



शिष्य धर्म

- धर्म कोई जड़ धारणा नहीं, मनुष्यों के समूह को भी धर्म नहीं कहते..... क्योंकि धर्म कोई मृत वस्तु नहीं होती, किसी विशेष वाद की चट्टान पर कपड़े धोते रहने से कपड़े उजले नहीं होते.....'
- ये शब्द हैं पूज्यपाद गुरूदेव के जिन्हें उनकी अमर कृति 'गुरू-सूत्र' से यहां उद्धृत किया गया है। जो किसी भी शिष्य के लिये श्रीमद्भगवतगीता से कम पवित्र पुस्तक नहीं है।
- पूज्यपाद गुरूदेव की धर्म के संबंध में दो टूक शब्दों की की गई टिप्पणी हमें यह सोचने के लिये विवश कर देती है कि यदि धर्म किसी विशदता में जाकर सम्पूर्ण होता है तो क्या यही बात शिष्य धर्म के प्रति भी व्यवहृत नहीं होगी?
- क्या अपने विशद स्वरूप में शिष्य धर्म केवल कुछ एक नियमावलियों के पालन के लेने के पश्चात् इति पर पहुंच जाता है अथवा किसी विशदता में अवस्थित होता हुआ सम्पूर्ण होता होगा?
- पूज्यपाद गुरूदेव ने अपने शिष्यों को सदैव नवीन दृष्टिकोण से सोचने की चेतना दी है और उन्होंने ही चेतना दी थी कि गुरू का तात्पर्य किसी व्यक्ति से न होकर उस जीवंतता से होता है जो प्राणश्चेतना के रूप में शिष्य को निरंतर गतिशील बनाये रखती है।
- समाज के संस्कारों में रचे-पचे आये शिष्य को गुरू सान्निध्य में रहने पर मर्यादा सिखाने के लिये यह आवश्यक था किसी नियमावली की रचना की जाये जिससे सभी शिष्यों के लिये आचार-संहिता बन सके किंतु इसका यह अर्थ तो नहीं कि शिष्य सदैव उन्हीं नियमों के घेरे में बंधा घूमता रहे।
- इस प्रकृति में सब कुछ परिवर्तनशील है और प्रकृति में हो रहे परिवर्तन के साथ वे ही परिवर्तित हो सकते हैं जो प्रकृति से निरंतर सामंजस्य बनाये रखने की कला को जानते हैं।
- पूज्यपाद गुरूदेव ने एक प्रवचन में कहा है कि जिस दिन शिष्य मेरे सामने पहली बार आकर खड़ा होता है मैं उसी दिन उसके बार में समझ जाता हूं कि वह कहां तक मेरे साथ चलेगा मैं मुंह से कुछ नहीं बोलता।
- और कोई शिष्य कैसे सदैव गुरू चरणों में नत बना रह सकता है, इसके लिये पूज्यपाद गुरूदेव द्वारा ही बताया गया एक सूत्र है कि यदि शिष्य को सदैव यह स्मरण रहे कि जिस प्रथम दिन वह गुरूदेव से मिला था उस दिन उसकी क्या मनःस्थिति थी तो उसे कभी प्रमाद नहीं हो सकता है।
- वास्तव में शिष्य धर्म एवं गुरू धर्म तो पृथक स्थितियां नहीं हैं। जिस प्रकार से किसी भी नदी का अस्तित्व अंततोगत्वा समुद्र में मिल कर सम्पूर्ण होता है उसी प्रकार से किसी भी शिष्य की पूर्णता तब होती है जब वह अपने गुरू में विसर्जित हो जाता है अर्थात् उनके समक्ष संकल्प-विकल्प से रहित हो जाता है।
- नदी जब तक समुद्र में विसर्जित नहीं होती है तब तक उसका धर्म होता है निरंतर छटपटाते हुये किनारों को तोड़ कर बहते रहना और जब वह विसर्जित हो जाती है तो उसका धर्म बन जाता है समुद्र के प्रवाह में घुल-मिल कर उमड़ते रहना।

आइए! इस निखिल जयंती के पर्व पर शिष्य धर्म के प्रति पूरक गुरू धर्म की चर्चा करें क्योंकि पूज्यपाद गुरूदेव सदैव यही कहते थे कि अभी बहुत मार्ग तय करना है और मेरे कार्य तुम्हें ही पूरे करने हैं।